27/07/2020

Social Psychology

Paper V

B.A. III (Hons.)

Causes of Social Tension

सामाजिक तनाव के कारण

सामाजिक तनाव के भिन्न-भिन्न रूप होते हैं। ऐसे तो विभिन्न तरह के सामाजिक तनाव जैसे - सांप्रदायिक तनाव (communal tension), जातिगत तनाव (caste tension), वर्ग तनाव (class tension), युवा तनाव (youth tension) आदि मुख्य हैं। इनमे से प्रत्येक प्रकार के सामाजिक तनाव के अलग-अलग कई विशिष्ट कारण (specific causes) हैं। फिर भी, कुछ ऐसे कारण या कारक हैं जो सभी प्रकार के सामाजिक तनावों को उत्पन्न करते हैं। इसी प्रकार के सामान्य कारणों या कारकों या निर्धारकों की व्याख्या निम्नलिखित है -

1. मनोवैज्ञानिक कारक (Psychological Factors) –

ऐसा देखा गया है कि सामाजिक तनावों को उत्पन्न करने में मनोवैज्ञानिक कारकों का बहुत बड़ा हाँथ है। इन मनोवैज्ञानिक कारकों के महत्त्व को देखते हुए Murphy, 1953 ने ठीक ही कहा है

"तनाव व्यक्तियों के मन में पहले उपजता है और तब क्षेत्र में जाता है।"
"Tensions begin in the minds of men first and then go to the field."

ऐसे कारकों में निम्नांकित प्रमुख हैं –

(i) निराशा (Frustration) –

Miller एवं Dollard, 1938 के अनुसार तनाव एवं हिंसा का एक प्रमुख कारण निराशा होता है। समाज या समुदाय के अधिकतर व्यक्तियों में लक्ष्य की प्राप्ति न होने पर उनमें एक सामान्य निराशा उत्पन्न हो जाती है। इस तरह के तनाव के कारण ही प्रायः समाज में जातिगत दंगे होते रहते हैं। उदाहरण के तौर पर जब-जब सरकार पिछड़ी एवं हरिजन जातियों को दी जाने वाली सुविधाओं का ऐलान करती है, तब-तब उससे उच्च

जाति के लोगों में निराशा उत्पन्न होती है क्यूंकि वे लोग ऐसा समझने लगते हैं कि उनकी रोटी छीन कर दूसरे को दी जा रही है। शायद यह कारण है कि पिछड़े वर्ग एवं उच्च वर्ग के लोगों में सामाजिक तनाव अक्सर बना रहता है।

(ii) **ध्वंसात्मक प्रवृत्ति (Destructive Instinct) –**

सामाजिक तनाव का एक मुख्य कारण कुछ मूल प्रवृत्तियाँ भी होती हैं। Sigmund Freud ने मूल प्रवृत्ति (instinct) को मूलतः दो भागों में बांटा है - जीवन मूल प्रवृत्ति (life instinct) तथा मृत्यु मूल प्रवृत्ति (death instinct)। जीवन मूल प्रवृत्ति के कारण व्यक्ति तरह-तरह के रचनात्मक कार्यों को करता है तथा मृत्यु प्रवृत्ति (death instinct) के कारण व्यक्ति ध्वंसात्मक कार्यों (destructive works) को करता है। यही कारण है कि इसे ध्वंसात्मक प्रवृत्ति कहा जाता है। इस प्रवृत्ति से तरह-तरह के सामाजिक तनाव का जन्म होता है। सांप्रदायिक तनाव, जातिगत तनाव एवं वर्ग तनाव में विशेषकर इस प्रकार की ध्वंसात्मक प्रवृत्ति की अभिव्यक्ति किसी न किसी रूप में अक्सर होती देखी गयी है।

(iii) **असुरक्षा का भाव (Feeling of Insecurity) –**

जब किसी समाज या समुदाय के अधिकतर लोगों में असुरक्षा की भावना उत्पन्न हो जाती है तो इससे भी सामाजिक तनाव उत्पन्न हो जाता है। जब एक समुदाय के लोगों को दूसरे समुदाय के लोगों से अपने जान माल की असुरक्षा का अनुभव होता है तो वे तनाव से भर जाते हैं और अपनी सुरक्षा के लिए चिंतित हो जाते हैं। युवा तनाव को उत्पन्न करने में भी इस कारक का बहुत बड़ा हाँथ होता है। उच्च जाति तथा उच्च वर्ग के लोग निम्नजाति तथा पिछड़ा वर्ग के लोगों के बढ़ते कदम को देखते हुए अपने भविष्य को असुरक्षित समझने लगते हैं और इसे सुरक्षित करने के लिए कभी आरक्षण का विरोध करते हैं कभी आक्रमणकारी व्यवहार करते हैं। परिणामतः जातिगत तनाव, जातिगत दंगे तथा वर्ग संघर्ष घटित होते हैं।

(iv) **प्रतियोगिता एवं प्रतिद्वन्द्विता (Competition and Rivalry) –**

जब एक समुदाय या समाज के लोग दूसरे समुदाय या समाज के लोगों के साथ किसी विषय पर प्रतियोगिता करते हैं तो इससे उनमें प्रतिद्वन्द्विता की भावना उत्पन्न होती है जिससे सामाजिक तनाव की उत्पत्ति होती है। आर्थिक क्षेत्र तथा राजनैतिक क्षेत्र में अन्य क्षेत्रों की तुलना में समाज के भिन्न-भिन्न वर्गों में काफी अधिक प्रतियोगिता होती है जिसके परिणामस्वरूप वर्ग तनाव उत्पन्न होने की संभावना अधिक होती है। आर्थिक क्षेत्र में सबल वर्ग तथा निर्बल वर्ग के बीच तीव्र प्रतियोगिता होती है जिसके कारण इन दोनों के बीच अक्सर तनाव एवं संघर्ष जैसी स्थिति बनी रहती है।

(v) **त्रुटिपूर्ण अनुकूलन (Maladjustment) –**

ऐसा देखा गया है कि कभी-कभी किसी समाज या समुदाय के लोगों में कुछ सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थिति में विभिन्नता के कारण उनका अनुकूलन ठीक ढंग से नहीं हो पाता है जिसके कारण भी सामूहिक तनाव उत्पन्न हो जाता है।

(…to be continued)

Dr. Hena Hussain

Asst. Professor

Department of Psychology

Oriental College, Patna City

WhatsApp No. – 9334067986

Email-drhenahussain@gmail.com